

# ईशान



ISO 9001:2015

अंक 2, सितम्बर 2022

हिंदी गृह पत्रिका , उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक)

शिलांग में चेरीब्लॉसम का त्यौहार



उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र

भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग

उमियम 793103, शिलांग, मेघालय

## आजादी का अमृत महोत्सव के लिए चलनशील प्रदर्शनी

स्वतंत्रता आंदोलन के बारे में जनता में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए 23/03/2022 को शिलांग के महत्वपूर्ण स्थानों पर संबंधित वीडियो क्लिप के साथ देश भर के 75 स्वतंत्रता सेनानियों को प्रदर्शित करने वाली एक चलनशील प्रदर्शनी दिखाई गई। यह भारत की आजादी की 75 वीं वर्षगांठ "आजादी का अमृत महोत्सव" मनाने के लिए साल भर की गतिविधियों के एक भाग के रूप में आयोजित किया गया था।



निदेशक, एन.ई-सैक ने चलनशील प्रदर्शनी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया



शिलांग शहर के विभिन्न हिस्सों में चलनशील प्रदर्शनी

# “ईशान”

हिंदी गृह पत्रिका  
उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष  
उपयोग केंद्र  
(एन.ई-सैक)  
अंक -II सितंबर, 2022

## परम संरक्षण

डॉ. एस.पी.अग्रवाल, निदेशक  
एवं अध्यक्ष, राजभाषा  
कार्यान्वयन समिति

## संपादक मंडल

डॉ. विजय कृष्ण हैंडिक  
डॉ. कस्तुरी चक्रवर्ती  
डॉ. राँकी पेबम  
श्री अंजन देबनाथ  
श्री स्नेहाशीष दाश  
श्री कुमार आनंद  
श्रीमती नमिता रानी पाल  
मित्रा

## पत्रिका की रूपरेखा और अभिविन्यास

डॉ. राँकी पेबम  
श्रीमती नमिता रानी पाल  
मित्रा

चित्र सौजन्य: इंटरनेट से  
साभार

नोट- इस पत्रिका में प्रकाशित  
विचार लेखकों के अपने हैं।  
संपादक मंडल का इससे  
सहमत होना अनिवार्य नहीं  
है।

## अनुक्रमणिका

संदेश: निदेशक, एन.ई-सैक .....	3
संपादकीय .....	2
संदेश: राजभाषा विभाग की ओर से .....	3
कोरोना महामारी .....	4
शान है इसरो .....	7
साधना से संगम तक .....	8
बालिग .....	10
हिंदी की जयकार .....	12
चेरी ब्लॉसम .....	13
निदेशक: उपलब्धियाँ .....	16
ऐसा है मेरा बालक .....	19
एक अविस्मरणीय रेल यत्रा .....	20
पक्षी क्रंदन .....	23
विभिन्न प्रकार के घोंसले .....	24
आध्यात्म: जीवनी .....	25
सर्दियों में लाभदायक फल .....	27
लौट आएं अपने पास .....	30
अनमोल वचन .....	31
शिवसागर: एक ऐतिहासिक स्थान .....	32
चांदनी रातें .....	35
हिंदी दिवस पखवाड़ा 2021 .....	40
उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में राजभाषा गतिविधियाँ ...	43
स्वागतम .....	50
सेवानिवृत्ति .....	52
फोटोग्राफी .....	53
बाल चित्रकला .....	55



डॉ. शिव प्रसाद अग्रवाल  
निदेशक, एन.ई-सैक  
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, एन.ई-सैक



### संदेश

उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एन.ई-सैक) ने भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र (एन.ई.आर) में प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, अवसंरचना नियोजन, आपदा प्रबंधन सहयोग, आदि जैसे विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के लाभों को क्रियान्वित करने में बहुत महत्वपूर्ण प्रगति की है। विगत वर्ष के दौरान, एन.ई-सैक ने प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, संरचनात्मक योजना, स्वास्थ्य, शिक्षा, उपग्रह संचार और वायुमंडल विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में पूर्वोत्तर राज्यों के विकास के लिए कई परियोजनाओं को संपन्न किया है। वर्ष 2020-2021 के दौरान, केंद्र की वैज्ञानिक परियोजनाओं / गतिविधियों में काफी वृद्धि हुई है।

राजभाषा हिंदी मात्र संवाद की भाषा ही नहीं अपितु देश के जन-मानस की भाषा है। यह भारत सरकार की नीतियों, योजनाओं, जानकारीयों को आम जनता तक सुगमतापूर्वक पहुंचाने का सशक्त माध्यम है। एन.ई-सैक राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु जारी किए गए दिशा-निर्देशों का पालन कर रहा है। वर्ष 2016-17 और 2017-18 के दौरान उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एन.ई-सैक) को उत्तर पूर्वी क्षेत्र में ('ग' क्षेत्र कार्यालय) राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। इस बार भी वर्ष 2020 - 2021 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलांग द्वारा एन.ई-सैक को केंद्र में राजभाषा के सफल निष्पादन हेतु प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है। इस प्रकार के प्रोत्साहन और पुरस्कार से जहां एक ओर हमारा उत्साह वर्धन होता है वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों के सटीक अनुपालन के लिए हमें और अधिक प्रेरित और सजग करती है। इस वर्ष कोविड महामारी के बावजूद भी कोविड संबंधी सभी दिशा निर्देशों का पालन करते हुए एन.ई-सैक में हिंदी पखवाड़ा, विश्व-हिंदी दिवस इत्यादि का सफल आयोजन किया गया।

विगत वर्ष 2021 से एन.ई-सैक ने अपनी प्रथम हिंदी गृह पत्रिका- 'ईशान' का डिजिटल प्रकाशन किया गया। इसी क्रम में इस वर्ष 'ईशान' का द्वितीय अंक आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत है। इस अंक में कर्मचारियों और उनके परिवारजनों की ओर से विविध प्रकार की रचनाएं शामिल हुई हैं। आशा है पिछले अंक की ही भांति इस अंक की रचनाएं भी अवश्य ही आपका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल होगी।

पत्रिका के संपादक मंडल और प्रकाशन में सहायक सभी कर्मचारियों को हार्दिक अभिनंदन और शुभकामनाएं।

(डॉ. शिव प्रसाद अग्रवाल)

# संपादकीय



उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र की गृह पत्रिका 'ईशान' के द्वितीय अंक को बड़े हर्ष के साथ आप सब के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। सर्वप्रथम इस पत्रिका के प्रथम अंक को प्यार देने के लिए आप पाठकों का बहुत - बहुत धन्यवाद। आपकी सराहना ने सभी रचयिताओं का मनोबल काफी बढ़ाया है और वो आगे भी राजभाषा हिंदी में लेख लिखने के लिए प्रेरित हुए हैं। आपके प्रोत्साहन की ही देन है की हम इस वर्ष अपने 'ईशान' को और भी बेहतर बनाकर आपके मनोरंजन और ज्ञानवर्धन के लिए प्रकाशित कर रहे हैं।

इस अंक में भी आपकी, हमारे कर्मचारी और उनके परिवारजनों के अंदर छिपे साहित्यकार और कलाकार से मुलाकात होगी। खासकर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा " लौट आएं अपने पास " कविता पे। इस कविता ने कोरोना काल के मर्म को बड़े कलात्मक अंदाज़ में दर्शाया है। वही लघु कथा "बालिग" आपके मन को एक बार झकझोर ज़रूर देगा। " चेरी ब्लॉसम " जहाँ मेघालय की प्राकृतिक खूबसूरती का विश्व विख्यात त्यौहार से सबका परिचय कराती है, वहीं "ऐसा है मेरा बालक" वात्सल्य का घूंट पिलाती है। अंत में "चाँदनी रातें " शीर्षक डराती भी है और बखूबी हंसाती है। इन सबके अलावा बाकी रचना भी आपके आकर्षण का पात्र हैं और जाते - जाते बाल- चित्रकला सराहना ना भूलें।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए निदेशक महोदय और एन.ई-सैक राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सबको प्रेरित और प्रोत्साहित किया है , जिसके लिए मैं संपादक मंडल की ओर से उनका आभार व्यक्त करता हूँ। पत्रिका के सभी लेख रुचिकर एवं आकर्षक हैं तथा "ईशान" के माध्यम से एन.ई-सैक में आयोजित विभिन्न वैज्ञानिक एवं राजभाषा गतिविधियों की जानकारी भी दी गयी है। सम्पादक मंडल पत्रिका के प्रकाशन के कार्य में सहयोग प्रदान करने के लिए एन.ई-सैक परिवार का आभार प्रकट करता है।

अंत में पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे इस अंक में प्रकाशित लेखों और रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया ज़रूर हमें भेजें। पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझाव और परामर्श सदैव आमंत्रित हैं।

(कुमार आनंद, प्रशासनिक अधिकारी)

उप निदेशक (प्र.),  
राजभाषा विभाग,  
पूर्वोत्तर क्षेत्र गुवाहाटी

संदेश



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, शिलांग द्वारा गृह पत्रिका ईशान के द्वितीय अंक का सफल प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है, यह पत्रिका न केवल राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन में सहायक सिद्ध होगी, बल्कि यह आपके कार्यालय में हिंदी के प्रचार प्रसार में भी अग्रणी भूमिका निभाएगी। इससे अधिकारियों कर्मचारियों में सृजनात्मक शक्ति का विकास भी होगा। यह पत्रिका पूर्वोत्तर क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक विशेषताओं एवं धरोहरों सहित राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने में महती भूमिका निभाएगी तथा अंतरिक्ष विभाग की विशिष्टताओं को भी उजागर करेगी।

मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करता हूँ तथा यह आशा करता हूँ कि पत्रिका का अनवरत एवं सफल प्रकाशन होता रहेगा।

इस नेक कार्य के लिए सम्पादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई।

(बदरी यादव)



# कोरोना महामारी

कोविड – 19 या कोरोना रोग SARS-CoV-2 वायरस के कारण होनेवाली एक गंभीर सांस की बीमारी है। इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा एक महामारी घोषित किया गया है और वर्तमान में, यह दुनिया भर के लगभग 222 देशों और क्षेत्रों में फैल गया है। इस रोग के लक्षण इतने गंभीर नहीं होते जैसे – हल्का बुखार, खांसी, थकान, स्वाद या सूंघने की क्षमता में कमी। लेकिन, यह तब बहुत गंभीर हो जाता है जब हम तत्काल चिकित्सा, उपचार नहीं लेते और इसके परिणाम स्वरूप श्वसन संबंधी गंभीर समस्याएं उत्पन्न होती हैं। हमारे ऑक्सीजन का स्तर नीचे जा सकता है और यह जीवन के लिए खतरा बन सकता है। बीमारी को दूर रखने के लिए हमें कुछ बहुत ही साधारण नियमों का पालन करने की आवश्यकता है: बिना फेस कवर (मास्क) के बाहर न निकले, जितनी बार आवश्यक हो कम से कम 20 सेकेंड के लिए अपने हाथ धोएं, भीड़-भाड़ वाली जगह पर कम से कम एक मीटर की दूरी बनाकर रखें, लक्षण होने पर चिकित्सा सहायता ले। इनके अलावा सबसे ज़रूरी चीज़ है टीकाकरण (वैक्सीनेशन)। टीका लगवाने से आपकी जान बच सकती है। कोविड – 19 के टीके गंभीर बीमारी, अस्पताल में भर्ती होने और मृत्यु से सुरक्षा प्रदान करते हैं। इस बात के भी कुछ प्रमाण हैं कि टीका लगवाने से यह संभावना कम हो जाएगी कि आप दूसरों को संक्रमित करेंगे, इसका अर्थ यह है कि वैक्सीन लगवाने का आपका निर्णय आपके आसपास के लोगों की भी रक्षा करता है। भारत के हर एक हिस्से में टीकाकरण उपलब्ध कराने के लिए सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। जैसा कि इंडिया टुडे द्वारा बताया गया है, 29 दिसंबर 2021 तक भारत में 73,600 कोविड प्रतिरक्षण केंद्र चालू हैं। इसके अलावा भारत सरकार द्वारा घर-घर जाकर कोविड-19 टीकाकरण अभियान हर घर दस्तक की भी व्यवस्था की गई है।



हालांकि इतने प्रयास किए जा रहे हैं फिर भी लोग मर रहे हैं। यह हमारा जीवन है, सरकार केवल इस संबंध में सचेत करते हुए जागरूकता पैदा करके सुविधा प्रदान कर सकती है, यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसे गंभीरता से लेते हैं या नहीं। अब भी यह देखा जाता है कि बाज़ारों जैसी भीड़-भाड़ वाली जगहों पर लोग मुश्किल से ही मास्क पहनते हैं या कई व्यक्ति तो किसी भी प्रकार के कोविड प्रोटोकॉल का पालन करने में भी आनाकानी करते हैं। ऐसा करके हम न सिर्फ स्वयं को बल्कि हमसे जुड़े हमारे अपनों की ज़िंदगी को भी खतरे में डाल रहे हैं।

यह देखा गया है कि बुखार जैसे हल्के लक्षणों के लिए, लोग बिना किसी डॉक्टर की सलाह के स्वयं दवा लेते हैं और क्वारंटाइन से छुटकारा पाने के लिए या अपने परिवार से दूर होने के डर से दूसरों से छुपाने की कोशिश करते हैं। फिर जब बीमारी नियंत्रण से बाहर हो जाती है तब वे अस्पताल पहुंचते हैं, परंतु तब डॉक्टर के लिए उनकी जान बचाना नामुमकिन हो जाता है। जब भी हमें लगता है कि कोविड खत्म हो गया है तो यह फिर से एक अलग रूप में आ जाता है। सभी बच्चे कोविड महामारी के प्रकोप से बहुत पीड़ित हैं विशेषकर उनके शैक्षिक जीवन पर बहुत असर पड़ा है।



## सावधानी ही बचाव



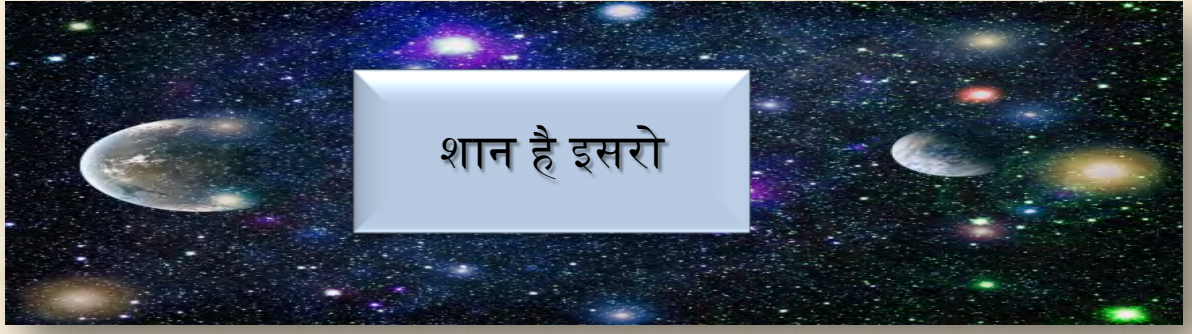
हालाँकि ऑनलाइन कक्षाएं उन्हें किताबों के आधार पर ज्ञान दे सकती हैं, लेकिन सामाजिक सबक नहीं दे सकता। ज्यादातर बच्चे स्वयं को अकेला और अलग-थलग महसूस करते जा रहे हैं। वे ज्यादा बातचीत नहीं करना चाहते, उन्हें लोगों से घुलना-मिलना भी पसंद नहीं, जो उनके मानसिक विकास के लिए भी ठीक नहीं है।

हम अपनी अगली पीढ़ी को इस तरह से पीड़ित नहीं होने दे सकते। अगर हम कोविड दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए कोविड के साथ जीना सीख ले तो इन सभी दुष्प्रभावों को रोका जा सकता है।

कोविड को हल्के में न लें और कोविड प्रोटोकॉल का गंभीरता से पालन करें ताकि हम अपने प्रियजनों के साथ जीवित रह सकें।



डॉ. रेखा भराली गोगोई



शान है इसरो

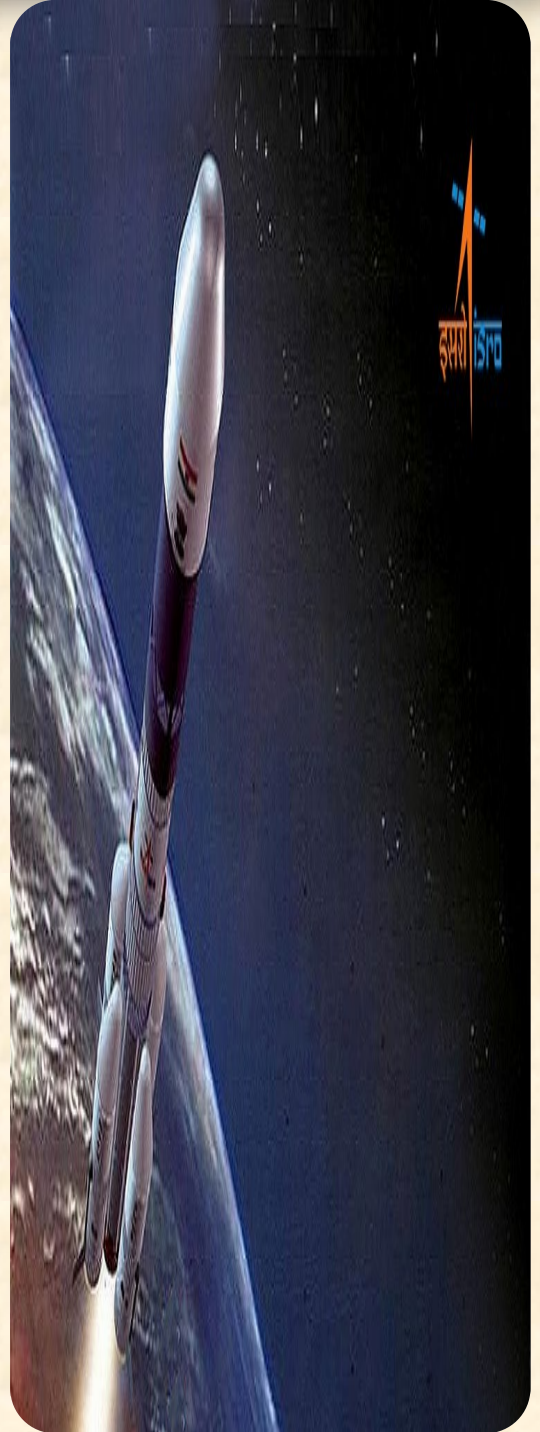
तुम अंतरिक्ष के हो प्रहरी,  
तुमको नमन हमारा।  
जग में किया उजागर हमको,  
तुमको नमन हमारा।

नाम नहीं बस, शान बने तुम।  
विश्व पटल में, पहचान बने तुम।  
सराहनीय अथक प्रयास तुम्हारा,  
तुम ही हो सम्मान हमारा।

गुंजायमान तुम्हारी शक्ति,  
जन-जन में जागी है भक्ति।  
नाम नहीं पहचान है इसरो,  
भारत माँ की शान है इसरो।



नमिता रानी पाल मित्रा





## साधना से संगम

नमस्कार,

प्रिय पाठकगण, सर्वप्रथम मैं आपका हार्दिक अभिवादन करता हूँ कि आपने, जैसा कि प्रस्तुत लेख का शीर्षक है, स्वयं को साधक के रूप में स्वीकार किया तथा लेख को विस्तार से पढ़ने के लिए रुचि दिखाई। मेरा मनतव्य मात्र इस लेख के माध्यम से पाठगण के साथ स्वयं का परिप्रेक्ष्य साझा करना है। यदि आप इस लेख के माध्यम से अपने जीवन को साधकवृत्ति से जोड़ने में सफल हो पाते हैं, तो यह मेरा सौभाग्य होगा।

“साधना से संगम” अर्थात् योजनाबद्ध तरीके से उद्देश्य की प्राप्ति। साधक को परिभाषित, मात्र एक शब्द से किया जा सकता है, जो है स्व-अनुशासन। साधकवृत्ति प्राप्त होना ही मनुष्य के लिए किसी मोक्ष से कम नहीं है। प्रत्येक अनुशासित देह का संपर्क सदैव ईश्वर से होता है, जो स्वयं निर्धारित करता है कि जीवन की ऐच्छिक दशा प्राप्त करने हेतु, किस दिशा का अनुसरण करना चाहिए। पल प्रतिपल वह निमित्त मात्र बन, स्वयं को उद्देश्य प्राप्ति के लिए न्योछावर कर देता है तथा सर्वदा उद्देश्य की जटीलता को आसान होता देख आनंदित महसूस करता है।

“साधक सर्वत्र पूज्यते” अर्थात् जिसके जीवन में अनुशासन है, वह समस्त लोक में आदर का अधिकारी तथा अनुसरणीय होता है। यह ख्याति को प्राप्त करना ही मनुष्य जीवन के लिए मोक्ष प्राप्ति के समतुल्य है, जो आपको मनुष्य से ईश्वरत्व की ओर अग्रसर करती है।

प्रत्येक पल जो जीवन में शेष है, वह साधकवृत्ति प्राप्त करने हेतु सुनहरा अवसर है। मनुष्य जब तक यह वृत्त प्राप्त नहीं करता, वह जीवन के अमृतत्व से सदैव अछूता ही रहता है तथा आलस्य रूपी विष का पान करते हुए प्रत्येक पल को छल कर देह त्याग देता है। अनुशासन एक अमृत कलश की भाँती प्रत्येक मनुष्य के जीवन में मोक्ष का द्वार खोलने के लिए एक रामबाण प्रयोजन है, जो आपको अपनी कल्पना को साकार करने या यँ कहें कि ईश्वरत्व प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।



जिस तरह जीवन जीने के लिए श्वास का हृदय से आवागमन आवश्यक होता है, उसी तरह जीवन को सार्थक रूप प्रदान करने के लिए साधकवृत्ति का होना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा यह कहना उचित ही होगा कि,

“जी तो सब लेते हैं यहाँ, ज़िंदगी जिए बिना,  
जी तो सब लेते हैं यहाँ, ज़िंदगी जिए बिना,  
ख्वाबों में तो पा ही लिया करते हैं हम सबकुछ,  
कुछ भी किए बिना”

साधना से संगम का सर्वप्रथम द्वार है उद्देश्य। उद्देश्य की परिकल्पना वह निराकार रूप है, जिसे साधना की ज्वाला में तपाकर आकार दिया जाता है। यह ज्वाला जीवन को प्रतिपल शीतल करती है, सरल करती है, क्योंकि यह जीवन का निराकार उद्देश्य को आकार रूप देकर साकार करती है। यह ज्वाला जीवन को जीवंत प्रज्वलित करती है। उद्देश्य निराकार से आकार रूप प्राप्त करता रहता है। यही आकार मनुष्य के रिक्त जीवन का ध्येय तय करता है, मार्ग प्रशस्त करता है, जीवन सुनिश्चित करता है तथा पल प्रतिपल जीवन में शीतलता निहित करता है।

जीवन में उद्देश्य कोई भी हो साधना की अग्नि हमेशा प्रज्वलित रहनी चाहिए। यह कुंजी है, यही मोक्ष है, यही जीवन जीने की कला है, यही साधना से संगम है। जय राम जी की। आप सभी साधकों का इस लेख के अंत तक बने रहने के लिए अत्यंत आभार एवं धन्यवाद।



हर्षवर्धन सोनी



## बालिग

दोपहर का भोजन करने के लिए वह बहुत देर बाद डाइनिंग टेबल पर जाकर बैठा। आजकल तो यह लगभग हर दिन की कहानी सी हो गई थी। सुबह दस बजे के आसपास वह घर से तेजपुर विश्वविद्यालय को निकल जाता और अपनी पी.एच.डी पे कुछ समय काम करने के बाद शाम को करीब छह बजे वापस आ जाता था। खाना खाते-खाते अपने बाए हाथ से वह मोबाइल पे टाउनशिप नामक गेम भी खेलता रहता। यह गेम इतनी दिलचस्प थी कि वह अगल – बगल होती हुई चीज़ों से उसका ध्यान हटा देती थी।

पास ही बैठे उसके पिताजी टीवी पे शाम का समाचार देख रहे थे। लेकिन आज उसका ध्यान हर क्षण बाद अपनी माँ द्वारा चलाई जानेवाली वाशिंग मशीन से आ रही गुंजन की वजह से भटक रहा था। इससे वह जैसे परेशान बिल्कुल भी नहीं था। खाने का अगला निवाला अपन हाथों से उठा के वह मुँह की ओर ले ही जा रहा था कि इतने में, फर्श पर होती हुई एक संवेग गतिविधि को उसके अनुभवी गेमर आँखों के परिधीय दृष्टि ने पकड़ लिया।

एक क्षण के लिए उसने सोचा कि कहीं वह तिलचट्टा तो नहीं, लेकिन उसके अंतः प्रज्ञा ने उसे बताया कि उस प्राणी के चूहे होने की संभावना ज्यादा थी। जैसे उसके मन के उलझन को ही सुलझाने के लिए उस जीव ने एक बार फिर खुद को दिखाकर बिस्तर के नीचे जा छुपा। बिस्तर पर बैठे उसके पिताजी ने कहा, “लगता है चूहा घुस आया है घर के अंदर। इसे बाहर खदेड़ना पड़ेगा, वरना रात को रसोईघर में रखे हुए खाने के थैलो का क्या हाल करेगा मालूम नहीं।”



अपने पिता की इस बात को सुनके उसके मुँह से धीमे स्वर में “हाँ” निकला और वह वही बैठे कुछ होने की अपेक्षा में थोड़े क्षण इंतज़ार करने लगा। पर ठीक तभी उसे सहसा एक गहरा अहसास हुआ। उसके पिताजी अब तिरसठ साल के हो चुके थे और एक ऐसे नस संबंधी बीमारी से जुझ रहे थे जो उनके दोनों पैरों को धीरे-धीरे कमज़ोर कर रही थी।

उसका मन पलक झपकते ही कई दशकों को लांघ कर अपने बचपन के यादों में खो गया। उसे याद आया कि कैसे उसके ‘हीरो’ पिताजी हमेशा उसे और उसके छोटी बहन को तिलचट्टे, मकड़ियों और यहाँ तक की चूहों से भी बचाते थे। और आज वह अपने पिताजी के स्थान पर था। उसे ही आज घर का रखवाला बनना पड़ेगा। अब ऐसे समस्याओं को उसे ही सुलझाना था। अभी इसे बाहर निकालता हूँ - यह कह, आँखों में एक नई दृढ़ता लिए वह बिस्तर की ओर आगे बढ़ा।



सिद्धार्थ भूयां

“ हिंदी द्वारा सारे भारत के एकसूत्र में पिरोया जा सकता है। ”  
-स्वामी दयानंद सरस्वती

## हिंदी की जयकार



कुछ कठिन नहीं है, ना ही है नामुमकिन,  
बस कमी है प्रयास की, अपने मन में विश्वास की।  
कुछ भी असंभव नहीं, कह गए है विद्वान सभी,  
फिर क्यों तुम डरते हों?

बोलो किससे यूँ बेमतलब झगड़ते हों।  
कुछ असंभव करने को तुम्हें कहा नहीं,  
बस जिस देश में जन्में, जहां पले बढ़े,  
जहाँ की स्वच्छ हवा में जीवन पाया,  
जिस देश ने तुमको दिलो  
जान से अपनाया,  
दी मज़बूत धरा कि चल सको तुम,  
पढ़-लिख अपने अस्तित्व को  
पा सको तुम।

इन सबके बाद अगर देश की भाषा को ही ना अपना सको  
तुम, तो क्या पूरी तरह देश के हो पाओगे तुम?

प्रश्न स्वयं से पूछो तुम,  
अपने अंतरमन को झकझोरें तुम,  
तब शायद

यह समझ पाओगें,

कुछ ज़्यादा तुमसे चाहा नहीं हमने।

बस एक प्रयास है हमारा कि सभी देश के प्यारे,  
देश की भाषा को अपनाए और एक स्वर में  
हिंदी की जयकार लगाए।

जय हिंदी, जय हिंदी, जय हिंदी  
ये गान सुनाए।



- नमिता रानी पाल मित्रा

## चेरी ब्लॉसम



मेघालय पूर्वोत्तर भारत का पर्वतीय राज्य है जो प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण है। स्कॉटलैंड ऑफ ईस्ट के नाम से विख्यात शिलांग मेघालय की राजधानी है। यह स्थल पर्यटकों के मध्य बहुत ही प्रसिद्ध है। नवंबर अपने साथ शिलांग में ठंड तो लाती ही है साथ ही लाते हैं खुबसुरत चेरी ब्लॉसम के फूल। तीन दिवसीय “शिलांग चेरी ब्लॉसम” त्यौहार का उद्घाटन मेघालय के माननीय मुख्यमंत्री श्री कॉनराड के संगमा और भारत में जापान के राजदूत श्री सतोशी सुजुकी ने किया।

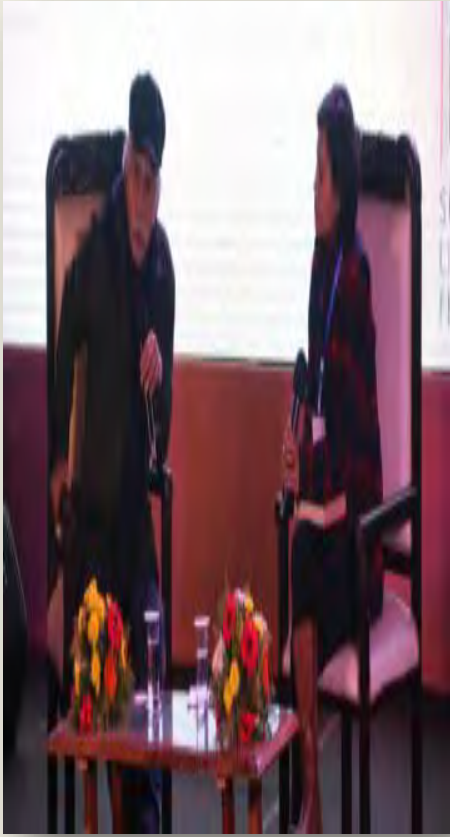
यह उत्सव 25 नवंबर से 27 नवंबर 2021 तक मनाया गया। पिछले साल वर्ष 2020 में कोविड महामारी के कारण इस लोकप्रिय कार्यक्रम को रद्द कर दिया गया था। इस वर्ष कोविड प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए यह उत्सव मेघालय में दो स्थानों, वाडर्स लेक और पोलो ग्राउंड में आयोजित किया गया था। वार्षिक उत्सव चेरी ब्लॉसम फूलों के वास्तविक खिलने के साथ मेल खाता है। इसे प्रुनस सेराइडस के नाम से भी जाना जाता है। ये फूल हिमालय को रेखांकित करते हैं और पूर्व और पश्चिम खासी पहाड़ियों को कवर करते हैं। इन फूलों को जापानी चेरी और साकूरा के नाम से भी जाना जाता है। यह जापान का राष्ट्रीय फूल है।





नवंबर क महीने में पूरे मेघालय राज्य में गुलाबी चैरी ब्लॉसम फूल खिलते हैं इसलिए इस महोत्सव को 'चैरी ब्लॉसम महोत्सव' नाम दिया गया। इस त्यौहार में सीधा प्रसारित संगीत और अन्य गतिविधियाँ जैसे पेजेंट, नृत्य प्रतियोगिताएं, व्यंजन, कला और शिल्प इत्यादि के द्वारा अपने क्षेत्र को प्रतिनिधित्व करने वाले कई स्टाइल शामिल है।

इस महोत्सव में बुक रीडर्स से लेकर हार्डकोर पार्टी लवर तक सबके लिए कुछ न कुछ आकर्षण है जैसे- इस अवसर पर इस बार शिलांग साहित्य महोत्सव के प्रथम संस्करण का भी उद्घाटन किया गया। पहले दिन शिलांग साहित्यिक उत्सव से इस उत्सव का आगाज़ हुआ, जहां पर विभिन्न प्रकार के पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया। पुस्तकों के साथ-साथ सभी आगंतुकों के पास पुस्तकों के लेखकों के साथ सीधे संपर्क करने का भी सुनहरा मौका था। इस दौरान कई नई पुस्तकें भी विमोचित किए गए। इस वर्ष सिने जगत के मशहूर अभिनेता नसीरुद्दीन शाह भी इस कार्यक्रम के हिस्सा बने और उन्होंने हमसे इस उत्सव में अपने अनुभव साझा किए। इस उत्सव को दो स्थानों में आयोजित किया गया था यथा – वाड्स लेक और पोलो ग्राउंड। वाड्स लेक जहा साहित्य उत्सव का आयोजन किया गया और पुरस्कार विजेता लेखक, राष्ट्रीय प्रकाशक, साहित्यिक ऐजेंट, दृश्य कलाकार, स्टोरीटेलर्स, सस्टेनबल फैशन, संगीत और गीत, पुस्तक विक्रेता और फिल्म लेखन आदि को मंच प्रदान



किया गया वही पोलो ग्राउंड में विभिन्न प्रकार के रोमांचक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ जो जापान के विभिन्न प्रतियोगिताओं से प्रेरित थे जैसे- कोसप्ले, लोकल बीयर और वाईन बनाने की प्रतियोगिता आदि। साथ ही फैशन शो, जापनीस/कोरियन फुड, मिस्टर व मिस चेरी ब्लॉसम, मिसिस चेरी ब्लॉसम और भित्ति चित्र आदि कई प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया था। कोई भी कार्यक्रम संगीत के बिना अधूरा होता है। इस उत्सव में भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह के कलाकारों जैसे – यू.ए.ई सी.एन.आर से लेकर पुर्तगाल के ई.डी.एम कलाकार नेरी फरारी ने इस उत्सव की शोभा बढ़ाई। इस प्रकार इस वर्ष शिलांग में चेरी ब्लॉसम उत्सव को पूरे तीन दिन तक रंगारंग कार्यक्रम के साथ मनाया गया। संभवतः आगामी वर्षों में हमको इस अभूतपूर्व उत्सव के कई और नए रूप देखने को मिलेंगे।



*विपिन कुमार राय*

## डॉ. शिव प्रसाद अग्रवाल



डॉ. शिवप्रसाद अग्रवाल ने 17 सितंबर, 2021 से निदेशक, एन.ई-सैक का कार्यभार ग्रहण किया।

एन.ई-सैक में शामिल होने से पहले, उन्होंने भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (आई.आई.आर.एस), इसरो, देहरादून के जल संसाधन विभाग के समूह प्रमुख के रूप में कार्य किया है। डॉ. अग्रवाल जल संसाधनों में रिमोट सेंसिंग और जी.आई.एस अनुप्रयोगों के क्षेत्र में एक अत्यधिक कुशल वैज्ञानिक है और साथ ही उन्होंने इसरो के क्षमता निर्माण और आउटरीच कार्यक्रम में अत्यधिक योगदान दिया है।

उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से कृषि इंजीनियरिंग में बी.टेक. की डिग्री, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से स्नातकोत्तर और पी.एच.डी की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने हाइड्रोलॉजिकल मॉडलिंग के क्षेत्र में आई.टी.सी/आई.एच.ई, नीदरलैंड से पोस्ट डॉक्टरेट अनुसंधान किया।

उन्होंने 1996 में आई.आई.आर.एस में अपना करियर शुरू किया और जल संसाधन प्रबंधन, आपदा प्रबंधन और हाइड्रोलॉजिकल प्रवृत्ति पर जलवायु परिवर्तन प्रभाव मूल्यांकन में रिमोट सेंसिंग और जी.आई.एस अनुप्रयोगों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उन्होंने बड़े पैमाने पर हाइड्रोलॉजिकल मॉडलिंग, सिंचाई जल प्रबंधन, मृदा क्षरण मूल्यांकन, हिमपात, बर्फ और ग्लेशियर गलन अध्ययन, बाढ़ मानचित्रण, निगरानी और बाढ़ पूर्व चेतावनी प्रणाली, अंटार्कटिका और आर्कटिक क्षेत्र में क्रायोस्फीयर अनुसंधान आदि को कवर करते हुए क्षेत्रीय और राष्ट्रीय परियोजनाओं का सफल नेतृत्व किया है। उन्होंने अनुसंधान अनुप्रयोगों और क्षमता निर्माण क्षेत्र में समूह की एकसाथ प्रगति में अनुकरणीय नेतृत्व का प्रदर्शन किया। 2016 - 2021 अवधि के दौरान एशिया और प्रशांत में अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध केंद्र (सी.एस.एस.टी.ई.ए.पी) के कार्यक्रम समन्वयक के रूप में, डॉ. अग्रवाल ने एशिया प्रशांत क्षेत्र में अंतरिक्ष विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोगों में क्षमता निर्माण में क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मज़बूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने क्षेत्र के प्रतिभागियों के लिए शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों, भारत में विदेशी मिशनों और विदेशों में भारतीय मिशनों से बातचीत की। इन कार्यक्रमों में आई.आई.आर.एस, देहरादून तथा सैक और पी.आर.एल अहमदाबाद में आयोजित रिमोट सेंसिंग और जी.आई.एस, उपग्रह संचार, उपग्रह मौसम विज्ञान और वैश्विक जलवायु, अंतरिक्ष और वायुमंडलीय विज्ञान तथा जी.एन.एस शामिल थे।

डॉ. अग्रवाल अपने शिक्षण कौशल के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने आई.आई.आर.एस के विभिन्न क्षमता निर्माण के कार्यों में व्यापक योगदान दिया है, जिसमें उपयोगकर्ता विभागों, केंद्र और राज्य सरकार के मंत्रालयों, विश्व विद्यालय संकाय आदि के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं।

उनका सभी आई.आई.आर.एस शैक्षणिक कार्यक्रमों जैसे- एम.टेक (आर.एस और जी.आई.एस), एम.एससी (भू-सूचनात्मक), पीजी डिप्लोमा और अन्य प्रमाण पत्र पाठ्यक्रमों में प्रमुख योगदान रहा है। उन्होंने 26 एम.टेक छात्रों, 38 पी.जी डिप्लोमा छात्रों का पर्यवेक्षण किया है और 5 पी.एच.डी छात्रों का मार्ग दर्शन किया है। उन्होंने कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए, जिसमें इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स ऑफ इंडिया (उत्तराखंड राज्य) शामिल है, जिसमें उन्हें क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए 2014 के लिए प्रख्यात इंजीनियर्स पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें 2016 में सोसायटी ऑफ रिमोट सेंसिंग (आई.एस.आर.एस) प्रेसिडेंट एप्रिसिएशन मेडल और 2018 में आई.एस.आर.एस द्वारा उत्कृष्टता के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय भू-स्थानिक पुरस्कार प्रदान किया गया। वह इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (भारत) और इंडियन एसोसिएशन ऑफ हाइड्रॉलिस्ट के अध्यक्षता है।

डॉ. अग्रवाल कई वैज्ञानिक और प्रोफेशनल सोसायटीज़ के सक्रिय सदस्य हैं। वह इंटरनेशनल सोसायटी ऑफ फोटोग्रामेट्री एंड रिमोट सेंसिंग (आई.एस.पी.आर.एस) ऑन एजुकेशन एंड आउटरीच (2016-2021) के तकनीकी आयोग V के सचिव के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने 4 साल तक इंडियन सोसायटी ऑफ रिमोट सेंसिंग में सचिव और 2 साल तक कोषाध्यक्ष के रूप में सेवा प्रदान की। वह वर्तमान में जर्नल ऑफ इंडियन सोसायटी ऑफ रिमोट सेंसिंग में प्रबंध संपादक के रूप में योगदान दे रहे हैं। उन्होंने आयोजन सचिव के रूप में 53 देशों के लगभग 1000 प्रतिनिधियों के साथ स्पेस एप्लिकेशन: टर्चिंग ह्यूमन लाइव्स पर रिमोट सेंसिंग (ए.सी.आर.एस-2017) पर एशियाई सम्मेलन का भी सफलतापूर्वक आयोजन किया था।

उनके पास सहकर्मी की समीक्षा की गई अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पत्रिकाओं और सम्मेलन की कार्यवाही में 150 से अधिक शोध प्रकाशन हैं। उन्होंने 4 बुक चैप्टर और 19 तकनीकी रिपोर्ट भी लिखी है। उन्होंने सम्मेलनों और बैठकों में भाग लेने के लिए कई देशों का दौरा किया है जिससे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और सहयोग को मज़बूत करने में मदद मिली है।

# ऐसा है मेरा बालक



इस दुनिया में सबसे सुन्दर,  
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा  
मत पूछो मैं क्या बतलाऊं,  
कैसा है मेरा बालक !  
चमक है जिसकी आँखों में इतनी,  
है तेज सूर्य सा जिसके मुख पर,  
माया से अपनी, वो मोहित करदे,  
छूने से चांदनी सा वो शीतल ।  
बस एक झलक दिख जाए जो उसकी,  
दिन का बन जाए वह सबसे प्रिय पल।  
इस दुनिया में सबसे सुन्दर,  
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा,  
ऐसा है मेरा बालक !  
अच्छे अच्छों को घायल करदे,  
है नादान उसकी इतनी चंचलता।  
बिन मलहम हर ज़ख्म जो भरदे,  
है मोहक उसकी इतनी कोमलता।

बिन ज्ञान दिए भी ज्ञाता सबका,  
जीवन जो प्रकृति से सीखे हरपल।  
इस दुनिया में सबसे सुन्दर,  
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा,  
ऐसा है मेरा बालक ।  
आदर सत्कार जब करे बड़ों का,  
वो हाथ जोड़ कर शीश झुकाए।  
अपने यारो से मिलने पर वो,  
हाथ मिला कर गले लगाए।  
अपनेपन का भाव है जिसमे,  
बाँटे वो प्यार सभी में इकल ।  
इस दुनिया में सबसे सुन्दर,  
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा  
ऐसा है मेरा बालक ।

हर्षवर्धन सोनी





## एक अविस्मरणीय रेल यात्रा

भुवनेश्वर में वाणी विहार ट्रेफिक पोस्ट के पास शहर की रोशनी से थोड़ी दूर 11 जून 2018 की रात 10.00 बजे काफी अंधेरी रात थी। मुझे रेलवे स्टेशन पहुंचने के लिए ऑटो लेने की जल्दी थी। उस समय कोई शेयरिंग ऑटो नहीं था। मुझे पता था कि मुझे ऑटो पकड़ने में देरी हो जाएगी, लेकिन उस समय मैंने पास के एक प्रतिष्ठित रेस्तराँ में उस स्वादिष्ट बिरयानी को अधिक महत्व दिया, जिसके लिए मैं लंबे समय से तरस रहा था। कुछ मिनटों के इंतज़ार के बाद, मैं एक ऑटो में सवार हो गया, जहाँ मेरे अलावा कोई और यात्री नहीं था। रात करीब 11 बजे रेलवे स्टेशन पहुंचने से पहले मैंने एक-एक करके सभी स्ट्रीट लाइट्स पार की। मेरे पास एक बड़ा हैंडबैग, एक मध्यम आकार की ट्रॉली और एक छोटा बैग था जिसमें कुछ पैकेट चिप्स और दो पानी की बोतल थी। मैंने एक नए कार्यालय में शामिल होने और कुछ वर्षों तक वही टिके रहने की उम्मीद में एक नए स्थान की ओर अपना सफर शुरू कर दिया था। अपनी पिछली नौकरी से इस्तीफा देने के बाद मैंने अपने परिवार के साथ कुछ दिन बिताए थे।

स्टेशन पहुंचने के बाद मेरी नज़र वेटिंग रूम में आराम करने की जगह ढूंढने लगी। उस समय मौसम इतना गर्म नहीं था पर भारी बैग उठाकर चलने के कारण मुझे पसीना आने लगा था। अचानक, मैं कोने में पड़ी एक खाली कुर्सी के पास एक चार्जिंग सॉकेट देख कर खुश हो गया। किसी के वहाँ पहुंचने से पहले ही मैं सीट पर पहुंच गया। मैंने अपना बैग वही रख दिया और सीट पर बैठ गया, किसी नए मैसेज या कॉल की जांच करने के लिए मैं अपना फोन चैक करने लगा पर निराशा ही हाथ लगी।



क्योंकि न तो कोई मैसेज था न ही कोई मिस कॉल। मैंने वहाँ रात 3 बजे तक आराम किया। नींद आ रही थी, लेकिन बाद में ट्रेन में सोने के बारे में सोचते हुए मैंने अपनी आँखें खुली रखी और अपने फोन को घूरता रहा। ट्रेन के आगमन की घोषणा सुनकर मैं वेटिंग रूम के बाहर प्लेटफॉर्म पर गया। मेरी ट्रेन 15 मिनट में आने वाली थी। मेरे पास स्लीपर कोच की कन्फर्म टिकट थी जो मुझे आखरी वक्त पर मिल गया था। प्लेटफॉर्म की एस्बेस्टस छत से कोच नंबर की बोर्ड लटकी हुई थी जहां प्रत्येक ट्रेन की कोच आमतौर पर वहां निर्धारित स्थान पर रूकती है। मैं एक जगह खड़ा होकर अपनी कोच नंबर चेक कर रहा था की तभी ट्रेन अपनी गति धीमी करते हुए प्लेटफॉर्म पर आ कर रूक गई। उस ट्रेन के कोच बाहर से काफी भीड़-भाड़ वाली लग रही थी। पहले तो मुझे लगा कि यह अनारक्षित कोच है लेकिन कोच नंबर चेक करने के बाद मैं हैरान रह गया। दोनों दरवाज़ों में इतनी भीड़ थी की अंदर घुसने की जगह ही नहीं थी। खिड़की से मैं देख पा रहा था कि अंदर बहुत सारे लोग थे। ट्रेन वहां 10 मिनट तक रूकी।

कोच के दरवाज़े पर खचाखच भीड़ उमड़ी पड़ी थी, मैं अपने कोच के दरवाज़े पर पहुंचा और वहां भीड़ में खड़े कुछ लोगों से अनुरोध किया कि मुझे कोच के अंदर प्रवेश करने दें। मेरी नम्रता देखकर दरवाज़े पर खड़े कुछ लोग नीचे उतर आए और मुझे अंदर जाने दिया। अंदर घुसते ही मैं अपने पैरों को नीचे रखने के लिए जुझता रहा क्योंकि भीड़ के कारण पैर रखने के लिए जगह मिलना मुश्किल लग रहा था। बहुत मुश्किल के बाद मैं अपना भारी सामान लेकर अपनी सीट पर पहुंचा।





मेरी सीट पर 5 – 6 लोग अलग – अलग मुद्रा में सो रहे थे। मैं देख सकता था कि हर सीट पर लोग बैठे थे, चाहे वह महिला की हो या पुरुषों की। मैंने अपना सामान अपनी सीट के नीचे रखा और उन्हें जंजीर से बाँध दिया। जब मैं अपनी सीट पर लेट गया और कुछ सहज महसूस कर ही रहा था कि मैंने देखा कि जो लोग पहले मेरी सीट पर कब्ज़ा जमाए बैठे थे और मेरे आने से उन्हें सीट छोड़नी पड़ी थी वे अब मेरी और उत्सुकता से देख रहे थे ताकि उन्हें मैं फिर से बैठने की अनुमति दे दूँ। मुझे उन पर तरस आ गया और मैंने कहा कि आपमे से कुछ लोग बची हुई सीट में बैठ जाए। सोते समय करवट बदलना मेरे लिए बहुत मुश्किल था और इस तरह की असहजता के कारण मैं सुबह तक सो नहीं सका। मैं यही सोचता रहा कि अगले 24 घंटे मैं इस हालत में कैसे यात्रा करूँगा। खिड़की खुली होने के बावजूद मेरा दम घुट रहा था। अगली सुबह मैंने थकान महसूस किया और मेरी आँख लग गई। अचानक दोपहर में मेरी नींद खुली और अपने आस-पास शोर सुनाई दिया। परेशानी महसूस करते हुए, मैंने वह दिन बिताया और केवल वही खाना खाया जो मैं अपने साथ लाया था। शाम होते ही धीरे- धीरे लोग ट्रेन से उतरने लगे और ऐसा लगा जैसे सांस लेने के लिए मुझे फिर से ताज़ी हवा मिल रही हो। आज की रात शांत थी और मैं आसानी से सो सका। अगली सुबह मैं अपने गंतव्य पर पहुँचा और अपने ऑफिस गेस्ट हाउस के लिए निकल पड़ा।



स्नेहाशीष दाश

# पक्षी क्रंदन



मुक्त गगन में विचरण करते,  
हरदम हरपल लहराते थे।  
आज अचानक कैद हो गए,  
पिंजर में आबद्ध हो गए।  
बंदिश हमकों ना भाएगी,  
ना बंदी बन रह पायेंगे।  
मुक्त करो हमें इस बंधन से,  
दो हमको उनमुक्त गगन तुम।  
दो वही मुक्त धरातल हमको,  
जिसमें उन्मुक्त लहराते थे।  
जल बिन मछली जैसे ही हम,  
इस बंधन में मर जाएंगे।  
व्यथा हमारी समझो अब तुम,  
समझो क्यों है जटिल समस्या।  
क्यों इतनी तड़पन है हममें,  
क्यों है हममें अस्थिरता ये।

मानव जीवन श्रेष्ठ जनम है, फिर क्यों  
निकृष्ट कर्म तुम्हारे  
बंधक करके हमको बोलो,  
क्या पाओगे तुम सब आज?  
मुक्त करोगे हमको जब तुम,  
तभी रहेगा स्वस्थ समाज।



नमिता रानी पाल मित्रा

\*\*\*\*\*

# विभिन्न प्रकार के घोंसले



हमिंग बर्ड



तोता



बया



बतख



अबाबिल



हंस

चित्र संकलन -  
सुबाकोरडोर स्येमलेह



## श्रील प्रभुपाद की जीवन गाथा

(01 सितंबर 1896 – 14  
नवंबर 1977)



कृष्णकृपामूर्ति श्रीमद ए.सी.भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद का जन्म 1896 ई में भारत के कोलकाता नगर में हुआ था। उनके पिता गौर मोहन डे कपड़े के व्यापारी थे और उनकी माता का नाम रजनी था। उनका घर उत्तरी कोलकाता में 151, हैरिसन रोड पर था। गौर मोहन डे ने अपने पुत्र का पालन पोषण एक कृष्ण भक्त के रूप में किया। श्रील प्रभुपाद ने 1922 में अपने गुरु महाराज श्रील भक्ति सिद्धांत सरस्वती गोस्वामी से भेंट की। इसके ग्यारह वर्ष बाद 1933 में प्रयाग में उनके विधिवत दीक्षा प्राप्त शिष्य हो गए।

श्रील प्रभुपाद की दार्शनिक शिक्षा और भक्ति को पहचानते हुए, गौड़ीय वैष्णव सोसायटी ने उन्हें 'भक्तिवेदांत' उपाधि से सम्मानित किया। उन्होंने 1959 में जीवन के उच्चतम आश्रम (सन्यास) को स्वीकार कर लिया। राधा – दामोदर मंदिर, वृंदावन में श्रील प्रभुपाद ने अपने जीवन की उत्कृष्ट कृति पर काम करना शुरू किया: 18,000 श्लोक वाली श्रीमद भागवतम (भागवत पुरान) का अंग्रेजी अनुवाद और टिप्पणी। आरंभिक तीन खंड प्रकाशित करने के बाद सन 1964 में अपने गुरुदेव के अनुष्ठान को संपन्न करने वे 70 वर्ष की आयु में बिना धन या किसी सहायता के अमेरिका जाने के लिए निकले जहाँ सन 1966 में उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ (इस्कॉन) की स्थापना की।

## पुस्तकें और प्रकाशन



सन 1968 में प्रयोग के तौर पर वर्जीनिया (अमेरिका) की पहाड़ियों में नव – वृंदावन की स्थापना की। 1972 में टेक्सस के डैलस में गुरुकुल की स्थापना कर प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की वैदिक प्रणाली का सूत्रपात किया। सन 1966 से 1977 तक उन्होंने विश्वभर का 14 बार आध्यात्मिक भ्रमण किया तथा कृष्णभक्ति का प्रचार किया। उन्होंने विश्व की सबसे बड़ी आध्यात्मिक पुस्तकों की प्रकाशन संस्था- भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट - की स्थापना भी की। कृष्णभावना के वैज्ञानिक आधार को स्थापित करने के लिए उन्होंने भक्ति वेदांत इंस्टिट्यूट की भी स्थापना की। श्रील प्रभुपाद ने पश्चिम बंगाल में श्रीधाम मायापुर में कई बड़े अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के निर्माण को भी प्रेरित किया, जो जहाँ वैदिक अध्ययन के एक योजनाबद्ध संस्थान के लिए भी जगह है।

भक्तिवेदांत स्वामी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उनकी पुस्तकें हैं। भक्तिवेदांत स्वामी ने 60 से अधिक संस्करणों का अनुवाद किया है। वैदिक शास्त्रों – भगवत गीता, चैतन्य चरितामृत और श्रीमदभागवतम् – का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद किया। इन पुस्तकों का अनुवाद 50 से अधिक भाषाओं में हो चुका है और विश्वभर में इन पुस्तकों का वितरण हो रहा है।

**संकलन – रुमा पाल, माता - नमिता रानी पाल मित्रा**

**स्रोत - i. प्रभुपाद (लेखक – सत्स्वरूप दास गोस्वामी)**

**ii. इंटरनेट से साभार।**



## सर्दियों में लाभदायक फल



यूँ तो सर्दियों का मौसम हर साल की तरह अपने साथ कई आकर्षक उपहार ले आता है, परंतु जैसा कि आप सभी जानते हैं कि पिछले कुछ वर्षों से संपूर्ण देश कोरोना महामारी से जूझ रहा है। अतः कोरोना वायरस के चलते लोग अब सेहत को लेकर बहुत अधिक फिक्रमंद हो गए हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि सर्दियों में फलू या संक्रमण का फैलना आम बात है। ऐसे में लोग अपनी रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने के लिए काढ़ा, जूस या ग्रीन टी का सेवन कर रहे हैं। सर्दियों के मौसम में कई प्रकार के ऐसे फल पाए जाते हैं जिनके सेवन से स्वाभाविक रूप से इम्यूनिटी शक्ति में वृद्धि हो जाती है। आईए आज हम कुछ ऐसे ही फलों के बारे में जाने जो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को और अधिक सशक्त करने में हमारी मदद करेंगे।

### 1. अमरूद –



अमरूद विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होता है जो शरीर में इंफेक्शन से लड़ता है और कोशिकाओं को कई तरह के नुकसान से बचाता है। अमरूद सर्दियों का एक पसंदीदा फल है जो सभी सेवन कर सकते हैं। इसमें फाइबर भी उच्च मात्रा में पाई जाती है जो हृदय और ब्लड शुगर के लिए भी अच्छा माना जाता है।



## 2. नाशपति



नाशपति में विटामिन ई और सी जैसी एंटीऑक्सीडेंट और एंटी इनफ्लेमेट्री गुण पाए जाते हैं।

## 3. संतरा



विटामिन सी और कैल्शियम का स्रोत माना जाता है।



सेब में पेक्टिन, फाइबर, विटामिन सी और के पाया जाता है।



विटामिन सी और फाइबर अधिक पाया जाता है।

सर्दियों में जरूर खाएं  
ये सात फल



## 6. अनार



अनार का जूस प्रायः सभी लोगों का प्रिय होता है। यह शरीर में रक्त की कमी को भी दूर करता है। यह उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, वजन घटाने में और त्वचा के लिए भी बहुत फायदेमंद साबित होता है।

## 7. प्लम



प्लम को आलूबुखारा भी कहते हैं। आलूबुखारा को एंटीऑक्सीडेंट का स्रोत भी माना जाता है। इसमें कैंसर से लड़ने की क्षमता होती है। सर्दियों के मौसम में यह शरीर को मजबूती भी प्रदान करता है।



एमिका मारबनियंग





## लौट आएंगे अपने पास

शब्द नहीं मिल रहे.....  
नहीं साथ दे रही विचारधारा!  
कुछ लिखना चाहा, पर  
भाषा बन गई मूक।  
भाव अगर व्यक्त न हो पाये,  
तो कैसे खुद की कथा सुनाये?  
कैसे भावों को प्रकट करें हम?  
रचना कैसे सफल बनाएं??

आज यही प्रश्न, मन में उदित हुआ है।  
सब जग क्यूं सन्नाटा छाया?  
मनुष्य - मनुष्य से है भयभीत,  
मिलने से भी क्यूं कतराया।  
बच्चों का भी बचपन जाने,  
क्यूं होता जा रहा उनसे दूर।  
माता- पिता, भाई, बन्धू हर कोई  
है दुखी मजबूर।

बस अब धैर्य धरो तुम,  
समय यह भी कट जाएगी,  
घड़ी मुश्किल की छट जाएगी।  
फिर आएगी नई सुबह।  
उन्मुक्त गगन में पंछी बनकर  
स्वच्छंद विचरण कर पाएंगे।  
यही आस है, यही है विश्वास  
लौट आएंगे अपने पास।  
लौट आएंगे अपने पास।



नमिता रानी पाल मित्रा

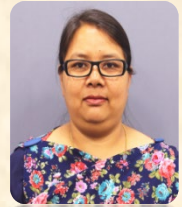
\*\*\*\*\*

अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो – डॉ.  
ए.पी.जे अब्दुल कलाम



1. अभीष्ट फल की प्राप्ति हो या न हो, विद्वान पुरुष उसके लिए शोक नहीं करता।
2. अमृत और मृत्यु दोनों इस शरीर में ही स्थित है। मनुष्य मोह से मृत्यु को और सत्य से अमृत को प्राप्त होता है।
3. अपनी प्रभुता के लिए चाहे जितने उपाय किए जाए परंतु शील के बिना संसार में सब फीका है।
4. मन से दुखों की चिंता न करना ही दुखों के निवारण की औषधि है।
5. सदाचार से धर्म उत्पन्न होता है और धर्म से आयु बढ़ती है।
6. विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है।

7. जो मनुष्य अपनी निंदा सह लेता है, उसने मानों सारे जगत पर विजय प्राप्त कर ली है।
8. जिसमें सत्य नहीं, वह धर्म नहीं और जो कपटपूर्ण हो, वह सत्य नहीं।
9. मधुर शब्दों से कही हुई बात अनेक प्रकार से कल्याण करती है, किंतु यदि वही कटु शब्दों में कही जाए तो महान अनर्थ का कारण बन जाती है।
10. सत्पुरुष दूसरों के उपकार को ही याद रखते हैं उनके द्वारा किए हुए बैर को नहीं।



फिबाकोरडेरे मारबनियंग

## शिवसागर: एक ऐतिहासिक स्थान



दिखो नदी के किनारे, गुवाहाटी, असम से 330 किमी दूर स्थित शिवसागर ऊपरी असम का एक जिला है। शिवसागर नगर छोटा है पर बहुत अनोखा है। शिवसागर का अर्थ – भगवान शिव का सागर। एक समय पर शिवसागर वह क्षेत्र हुआ करता था जहाँ आहोम के महान राजाओं ने छः शताब्दियों से भी अधिक शासन किया था। उस समय इस क्षेत्र को रंगपुर के नाम से जाना जाता था। अब यह एक छोटा सा नगर बन गया है, जो अपने महान अतीत के अवशेषों का संरक्षण अभी भी कर रहा है। शिवसागर का विशेष ऐतिहासिक महत्व है। इस पूरे शहर में यहाँ- वहाँ ऐतिहासिक स्मारक बिखरे हुए हैं। इसमें से प्रमुख हैं-

### (i) शिवदोल:-

शिवसागर शहर में स्थित शिवदोल भारत का सबसे विशाल शिवमंदिर है। उसकी ऊँचाई 104 फीट है। यह मंदिर वर्ष 1734 में आहोम के राजा स्वर्ग देव सिंह की रानी फुलेश्वरी के द्वारा बनाया गया था। यह मंदिर शिवसागर बरपुखुरु के किनारे स्थित है। शिवदोल  $26^{\circ}9889^{\circ}N$  और  $94^{\circ}6332^{\circ}E$  में स्थित है।

### (ii) नामदंग स्टोन ब्रिज:-

जोरहाट जिला से शिवसागर की ओर जाने के रास्ते में एक 300 साल से भी अधिक पुराना एक छोटा सा पुल मिलता है, जिसे नामदंग स्टोन ब्रिज नाम से जाना जाता है, इस पूरे पुल को एक ही पत्थर से बनाया गया है।



**(iii) रंगघर:-**

रंगघर का मतलब है मनोरंजन गृह। इसमें बैठकर आहोम साम्राज्य के राजा बिहू आदि महोत्सव में भैंस की लड़ाई जैसे खेल का आनंद उठाते थे। आहोम राजा प्रमत्त सिंह ने 18वीं शताब्दी में इसका निर्माण करवाया था। यह विशेष रूप के लाल इटों, विशेष प्रकार के चावल और बतख के अंडों से सजाई गयी थी। रंगघर  $26^{\circ}9671^{\circ}\text{N}$  और  $94^{\circ}6191^{\circ}\text{E}$  में अवस्थित है।



**(iv) तलातल घर:-**

तलातल घर सभी आहोम इमारतों में सबसे बड़ा है। तलातल घर की इमारत भूमि के अंदर तीन मंजिला और ज़मीन के ऊपर चार मंजिल बनी हुई है। यह इमारत आहोम राजवंशी का निवास स्थान था। तलातल घर की दो गुप्त सुरंगें थीं। एक दिखो नदी से संलग्न थी और दूसरी 16 किमी लंबे और गढ़गाँव के राजभवन से जुड़ी थी। ये इमारत स्वर्ग देव राजेश्वर सिंह ने बनाया था। तलातलघर  $26^{\circ}9661^{\circ}\text{N}$  और  $94^{\circ}6246^{\circ}\text{E}$  में अवस्थित है।



**(v) कारेंग घर:-**

शिवसागर नगर से पंद्रह किलोमीटर दूर गरगांव में कारेंग घर स्थित है। यह भी आहोम राजा का ही महल था। इसका निर्माण 1752 में राजा राजेश्वर सिंह ने करवाया था। कारेंग घर में भी सात मंजिले हैं, जिसमें चार मंजिल ज़मीन से ऊपर और तीन नीचे है। यह कहा जाता है कि महल के नीचे वाले हिस्से में पूरी सेना रहती थी और ऊपर राजा का परिवार रहा करता था। कारेंगघर  $96^{\circ}9363^{\circ}N$  और  $94^{\circ}7450^{\circ}E$  में अवस्थित है।

**(vi) जयसागर तालाब:-**

जयसागर तालाब का निर्माण आहोम राजा स्वर्गदेव रूद्रसिंह ने 1697 में करवाया था। इस तालाब के निर्माण में 45 दिन का समय लगा था। राजा ने अपनी माँ जयमती की याद में इस तालाब को बनवाया था। जयसागर तालाब देश का सबसे बड़ा मानव निर्मित तालाब है। इसके किनारे जयदोल स्थित है जिसे राजा रूद्रसिंह ने ही बनवाया था। जयसागर  $26^{\circ}9524^{\circ}N$  और  $94^{\circ}6231^{\circ}E$  में अवस्थित है।



*अंतरीप बोरगोहाई, कक्षा - VIII  
सुपुत्र - डॉ. अरूप बोरहोगाई*



# चांदनी राते

आप मानव – भेड़िये के बारे में क्या जानते हैं? सिर से पाँव तक मोटे शॉल में लिपटे उस आदमी ने मुझसे बहुत गंभीर स्वर में यह सवाल पूछा। रात के 12 बज रहे थे, सरायघाट एक्सप्रेस के बाकी सभी यात्री गहरी नींद में सो रहे थे। अच्छा चलो, हम दोनों को छोड़कर सब। चलती गाड़ी में मुझे नींद कभी नहीं आती, इसलिए मैं जाग रहा था और मेरे हिसाब से यह सज्जन भी उसी रोग के मरीज़ थे। “क्या मैं यहाँ बैठ जाऊँ?” उसने मुझसे पूछा तो था पर बैठने के लिए मेरे उत्तर का इंतज़ार नहीं किया। मेरे सामने वाली बर्थ खाली थी, उसी पर वे बैठ गए। सच कहूँ तो मैं भी बातचीत करने के लिए किसी साथी की तलाश में था। मेरा मोबाइल फोन जो आमतौर पर मेरा साथ देती है, उसने भी मुझे धोखा दे दिया।

मैंने बातचीत शुरू करने के लिए उनसे कुछ साधारण सवाल पूछे पर उनके उत्तर बहुत संक्षिप्त थे। थोड़ा सा निराश होकर मैं खुदको नींद के हवाले सौंपने की सोच ही रहा था, तभी वह अचानक बोले। हालांकि मुझे उनका सवाल सही से समझ में नहीं आया था, परंतु बातचीत करने के अवसर ने मुझमें दिलचस्पी जगाई। लेकिन जैसे ही मैंने बोलने को मुँह खोला, तो केवल इतना ही कह सका, “किस बारे में?” उसने कहा, “मानव – भेड़िये जो पूनम की रात में मानव से भेड़िये में बदल जाते हैं।” हकपका के मैं कुछ देर उसके चेहरे की तरफ देखता रह गया और फिर से एकबार अनजाने में मेरे मुँह से निकला “ओह... !” “हाँ, आमदिनों में देखा जाए तो वे बिल्कुल मेरे या आप जैसे ही दिखते हैं, लेकिन चांदनी रात उनकी असली पहचान सामने ले आती है।” उसकी आवाज़ में कुछ तो था, कि अचानक मेरे तन – बदन में एक कपकपी महसूस हुई।



“आप मज़ाक कर रहे हैं क्या?” बात यह मेरी थी पर हंसी उसके चेहरे पर थी, और मेरे पीठ पर मैंने पसीने की एक बूंद को सरकते हुए महसूस किया। उसकी हंसी अब चली गई थी और वह पहले से ज्यादा गंभीर दिख रहा था। मुझे लगा कि वो शायद मुझे डराने की कोशिश कर रहा है, मैंने उसे थोड़ी कर्कश आवाज़ में कहा, “यह सब मनगढ़ंत कहानियां हैं, बच्चों को डराने के लिए, आप बच्चे तो नहीं लगते, और क्या मैं आपको बच्चा लगता हूँ?” जवाब में उसने कहा, “तब तो आपको एक कहानी से डर नहीं लगेगा, सुनेंगे एक कहानी एक मानव-भेड़िये की?” उसका सवाल किसी चुनौती से कम नहीं था और मुझे लगा कि मुझे ना कहना चाहिए, पर मेरे मुँह से जवाब निकला, “हाँ, क्यों नहीं?” “तो सुनियें, बात उस समय की है जब मानव-भेड़िये के बारे में भूल ही गए थे लोग, वे लोगों के बीच में ही रहते थे, आम ज़िंदगी जीते थे, बस पुनम की रात घरवाले उन्हें जंजीरों में बांध के रखते थे, क्योंकि उन रातों में वे मानव-भेड़ियों में बदलते थे, और सामने जो आए उन्हें कच्चा चबा जाते थे।” थोड़ा विराम लेके वह फिर से बोलने लगा, “यह एक अभिशाप था, जिसका कोई भी इलाज नहीं था। मानव-भेड़िये के काटने पर कोई उम्मीद नहीं रहती थी। बांकि ज़िंदगी इसी श्राप के साथ उनको जीना होता था।” वह थोड़ा रूका, मुझे लगा कि शायद वह खुद थोड़ा सा दुखी हो गया था। मेरे मन में एक बात आई और मैंने पूछा, “लेकिन मैंने सुना है कि एक मानव – भेड़िया कांटने के बाद आनेवाले पुनम के रात को ही काटे गए मानव बदलता था, और कुछ क्षेत्रों में इस बदलाव को टाला भी जा सकता था।” अब उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी और फिर उसने बोला, “सही सुने हैं आप,



आपकी दादी ने आपको सही बताया है।” उसके इस बात से मैं चौंक गया और बोला, “क्या कहा आपने? आपको कैसे पता है कि यह सब मुझे मेरी दादी ने बताया है, जवाब दीजिए।” अब यह महज़ एक कहानी नहीं रही थी बल्कि व्यक्तिगत होती जा रही थी। मेरे सवाल से वो चौंक गया, उसने मुझे जवाब देने की कोशिश की लेकिन पहली बार उसे शब्द नहीं मिले। उसने मुझसे मुँह फेर लिया। इससे मुझे गुस्सा आया और मैंने फिर से उससे पूछा, “जवाब दीजिए। मैं आपको नहीं छोड़ने वाला हूँ, जबतक न आप मुझे जवाब देते हैं।” अब जब उसने मुँह फेरा तो उसके चेहरे पर एक अजीब दर्द की छाप थी। उसने धीमे स्वर में बोला, “क्योंकि मैं तुम्हारा बाप हूँ, जिसने विरासत में तुम्हें यह श्राप दिया है।” यह सुनकर मेरे होश उड़ गए, खुदको संभालते हुए गुस्से में मैं बोला, “तुम झूठ बोल रहे हो, मेरे माता-पिता की मौत मेरे बचपन में ही एक दुर्घटना में हो गई थी।” उसने सिर झुकाते हुए मौन स्वर में बोला, “एक सफेद झूठ, जो हम सबने मिलके रचा था, तुमको सुरक्षित रखने के लिए। जब हमने देखा के काटने के बाद भी तुम अगले पूनम की रात को मानव-भेड़िये में नहीं बदले, तो हमने तय किया कि हम तुम्हें तुम्हारे दादी के पास छोड़कर बहुत दूर चले जाएंगे।” मैंने पूछा, “तो आप मुझे छोड़कर चले गए, फिर कभी मेरी खबर नहीं ली।” “नहीं बेटे, मैं हमेशा तुम्हारे आसपास ही था, असल में तुम बचपन में अंधे हो गए थे, इसलिए तुम्हें काटने के अगली पूनम की रात तुम चांद को देख ही नहीं पाए और यही कारण है कि तुममें कोई बदलाव नहीं आया।





बेटे तुम अनोखे हो, तुम्हारे पास हमारे सारे तोहफे हैं लेकिन हमारा कोई श्राप नहीं, तुम अमर हो सकते हो।” अचानक कुछ आवाज़ सुनाई दी जिसके सुनते ही मेरे पिता ने कहा, “अच्छा, अभी मैं जाता हूँ पर जब भी तुम मुझे याद करोगे, मैं आ जाऊंगा।” यह कहते ही मेरे मानव-भेड़िये पिता के आँखों से आंसू झलक पड़े। फिर अचानक से कई घटनाएँ एकसाथ घटी। तभी सहसा मैं बोल उठा, “लेकिन अब मैं अंधा नहीं रहा, सिर्फ तीन दिन पहले ही मेरी आँखों का ऑपरेशन हुआ है, अब मैं देख सकता हूँ।” तभी बाहर एकसाथ कई जानवर एकस्वर में चिल्ला उठे, और हम दोनों ने एकसाथ बाहर की ओर झाँका, पूनम की रोशनी से मेरी आँखें भर गईं। एकाएक मुझे कुछ हो रहा था, मैं अपने होश खो रहा था, साथ ही मेरे शरीर में अचानक एक उर्जा का उछाल उठा, जो मेरे अंदर, सदियों से सोया हुआ अपने बाहर निकलने के समय की प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने किसी को रोते हुए सुना, क्रंदन का स्वर जो धीरे- धीरे एक चीख में परिवर्तित हो गया। अब मैं कुछ और बन गया था, और मैं दौड़ रहा था, मैंने अपने अंदर ऐसा क्रोध महसूस किया जो मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। आखिरकार, मैं एक मानव-भेड़िये में बदल गया था। मैंने अपने नुकीले दांतों पर नरम नरम त्वचा महसूस किया जिसे मैं काट रहा था जिससे मेरा मुँह खून से भर गया था। लेकिन अचानक मेरे चेहरे पर ज़ोर से कुछ प्रहार हुआ और मैं दर्द से कराहने लगा। जब मेरी आँखें खुली तो मेरी पत्नी सामने खड़ी थी, अपने दाहिने हाथ को अपने बाएँ हाथ से पकड़े, जहाँ मेरे दांतों से काटने के निशान अब भी मौजूद थे।



उसका चेहरा क्रोध से लाल हो गया था, बची खुची हिम्मत जुटा के मैंने कहा, “तुम्हें पता है, मैं एक आदमी- भेड़िया हूँ।” “हाँ, वैसे तुम्हारे दाँत कुछ ज्यादा ही तेज़ हो गए हैं, समय आ गया है इनका कुछ करना होगा।” मैं बिल्कुल सुन्न हो गया था। धीरे- धीरे उठकर मैं रसोई की ओर चला, जहाँ कल रात के सारे गंदे बर्तन धोने के लिए रखे हुए थे। अपने लैपटॉप पर एक नज़र दौड़ाई जिसमें मैंने कल देर रात तक हॉलीवुड की प्रसिद्ध फिल्म श्रृंखला अंडरवर्ल्ड की सभी कड़ियाँ देखी थी। अचानक मुझे याद आया, बस दो ही दिन में तो पूनम की रात है।



अंजन देबनाथ

हिंदी है भारत की शान, आगे इसे बढ़ाना है  
हर दिन हर पल हमको हिंदी दिवस मनाना है।

## एन.ई-सैक में आयोजित हिंदी दिवस पखवाड़ा 2021

एन.ई-सैक में इस वर्ष कोविड - 19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में केंद्र सरकार द्वारा समय - समय पर जारी दिशा-निर्देशों, मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी) को ध्यान में रखते हुए ही दिनांक 14 सितंबर, 2021 से 29 सितंबर, 2021 तक हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े का उद्घाटन 14 सितम्बर 2021 को एन.ई-सैक सभाकक्ष में डॉ. के.के.शर्मा, प्रभारी निदेशक, एन.ई-सैक द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया फिर उनके द्वारा सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रतिज्ञा दिलाई गई। तत्पश्चात माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी का हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिए गए संदेश का पाठ किया गया।



*डॉ. के.के.शर्मा, प्रभारी निदेशक, एनईसैक द्वारा दीप प्रज्वलन कर हिंदी पखवाड़ा का शुभारम्भ*

इस दौरान कई प्रतियोगिताओं जैसे – रचनात्मक लेखन, हिंदी कविता पाठ, हिंदी कहानी पठन, आशुभाषण, श्रुतलेख और सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस के दौरान अन्य गतिविधियों के अतिरिक्त सभी मंत्रालय/विभागों द्वारा प्रदर्शन हेतु, हिंदी भाषा में प्रमुख सुक्तियों को डिसप्ले किया गया।

दिनांक 24.09.2021 को केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, गुवाहाटी से डॉ. शर्मिला ताई, हिंदी प्राध्यापक द्वारा सभी स्थायी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विषय – “टिप्पणी और मसौदा लेखन” पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।



**डॉ. एस.पी.अग्रवाल, निदेशक,  
एन.ई-सैक द्वारा समापन समारोह में  
संबोधन ।**



**डॉ. एस.पी.अग्रवाल, निदेशक, एन.ई.सैक  
द्वारा सभी विजेताओं को पुरस्कार और  
प्रमाण पत्र का वितरण।**

दिनांक – 29.09.2021 को समापन समारोह भी कोविड - 19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में केंद्र सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. एस.पी.अग्रवाल, निदेशक, एन.ई.सैक ने सभी को संबोधन करते हुए हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन हेतु सभी को बधाई दी और साथ ही सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। अंत में श्री अवनीश शुक्ला, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं सदस्य-सचिव राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिंदी पखवाड़े के समापन की घोषणा की गयी।

# एन.ई-सैक राजभाषा संबंधी झलकियां

The screenshot shows a Google Meet interface with the following details:

- Browser Tabs:** Inbox (69) - nesac.orf@gmail, Google Account, Google Account, google meet link for Hindi, Meet - dmt-gxof-jtq.
- Address Bar:** meet.google.com/dmt-gxof-jtq
- Meeting Title:** एन.ई-सैक राजभाषा संबंधी झलकियां
- Participants:** 25 participants are shown in a grid. One participant, Rekha Bharali, is highlighted with a green bar.
- Control Bar:** Meeting details, Mute, Unmute, End call, Present now.
- System Tray:** 20°C, 5:29 PM, 6/18/2021, ENG.

एन.ई-सैक विडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित हिंदी कार्यशाला



**नराकास, शिलांग द्वारा आयोजित वर्ष 2021-22 की प्रथम अर्धवार्षिक ऑनलाइन बैठक में एन.ई-सैक की सहभागिता**

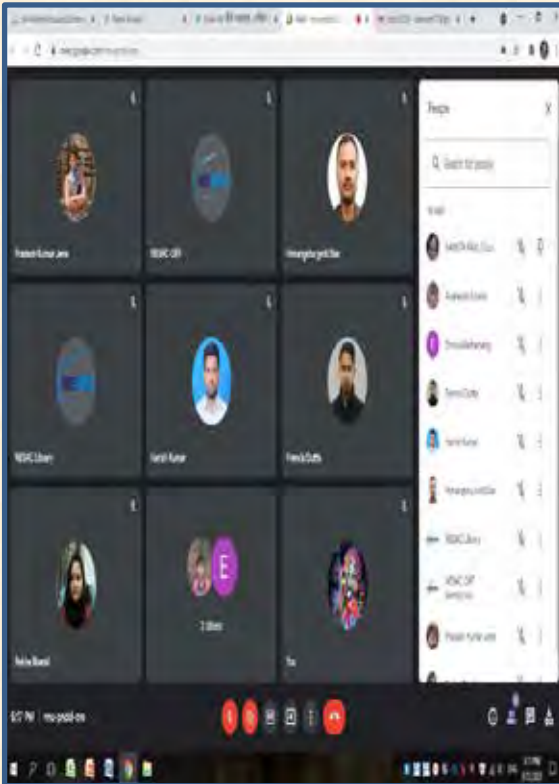


**नराकास, शिलांग द्वारा आयोजित वर्ष 2021-22 की द्वितीय अर्धवार्षिक ऑनलाइन बैठक में एन.ई-सैक की सहभागिता**

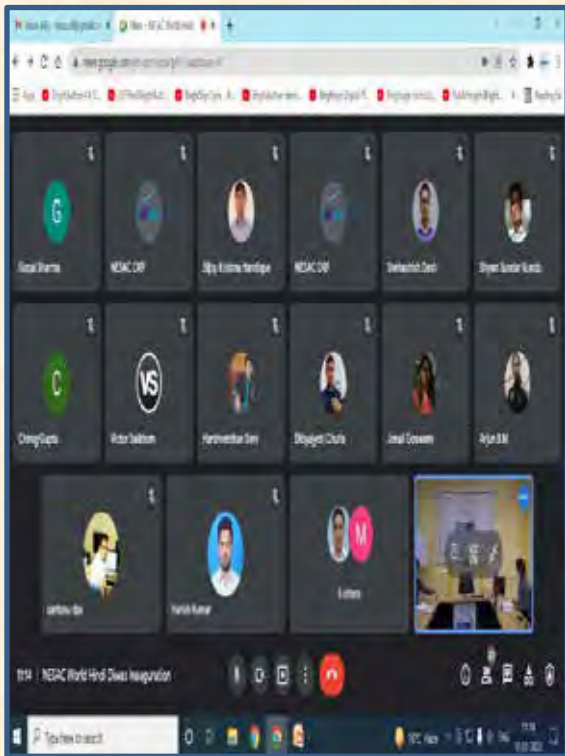
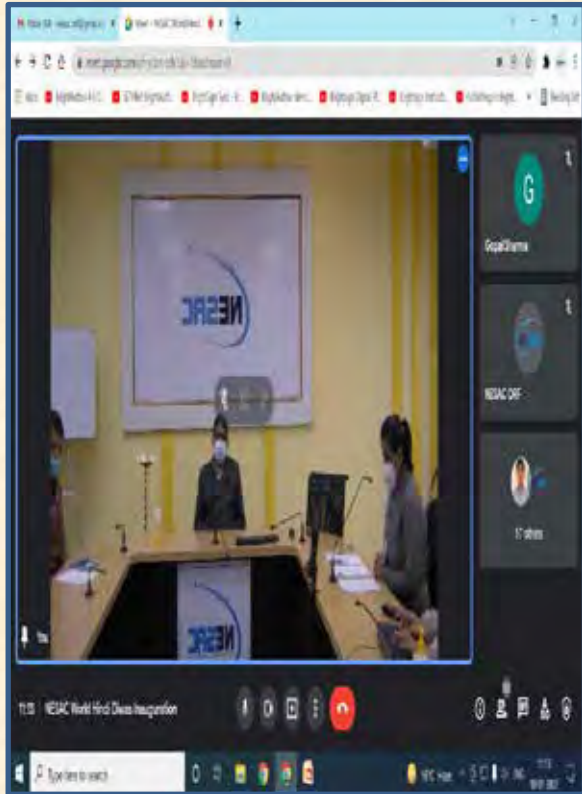


**एनई-सैक में हिंदी दिवस 14 सितंबर, 2021 के उपलक्ष्य में हिंदी पखवाड़े  
( 14 से 29 सितंबर 2021 तक) का आयोजन**





*एनई-सैक में हिंदी दिवस (14/09/2021) के उपलक्ष्य में आयोजित हिंदी कार्यशाला एवं विभिन्न प्रतियोगिताएं*



एनई-सैक में विश्व हिंदी दिवस (12/01/2022) का आयोजन



पूर्वोत्तर क्षेत्र स्थित 11 से 50 तक के कार्मिकों वाले कार्यालयों में वर्ष 2017-18 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के आधार पर एन.ई-सैक को 18 दिसंबर 2021 को पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए डिब्रुगड़, असम में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

# नगर राजभाषा शील्ड योजना: 2020-2021



नगर राजभाषा शील्ड  
योजना:2020 -2021 के तहत  
एन.ई-सैक को प्रशस्ति पत्र से  
सम्मानित किया गया।

# सुस्वागतम



श्री हिमांशु ज्योति  
दास, वैज्ञा./अभि.  
'एससी'



डॉ. ध्रुवल भावसार,  
वैज्ञा./अभि. 'एससी'



श्री सिद्धार्थ भूया,  
वैज्ञा./अभि. 'एससी'



श्री सुमंथ बी.सी,  
वैज्ञा./अभि. 'एससी'



श्री शानबोर कुरबाह,  
वैज्ञा./अभि. 'एससी'



# सुस्वागतम



श्री कुमार आनंद,  
प्रशासनिक  
अधिकारी



श्री अबु साहिन,  
वैज्ञानिक सहायक



श्री विपिन राय,  
सहायक



सुश्री फिबा एनिलिया  
डखार, सहायक



हार्दिक अभिनंदन

# सेवानिवृत्ति खुशहाल सेवानिवृत्त जीवन की शुभकामनाएं



श्री पी.एल.एन राजू  
पूर्व निदेशक, एनईसैक  
(अक्टूबर 2015 - जून 2021)



# फोटोग्राफी



कुमार आनंद,  
प्रशा. अधिकारी



# फोटोग्राफी



कुमार आनंद,  
प्रशा. अधिकारी



# बाल चित्रकला



अलंकृता भराली,  
सुपुत्री डॉ. रेखा भराली गोगोई





नभन्या शर्मा  
सुपुत्री डॉ. के.के शर्मा





**नभन्या शर्मा**  
**सुपुत्री डॉ. के.के शर्मा**





अनाया शर्मा  
सुपुत्री डॉ. के.के शर्मा





सर्वधर्म  
समोत्थान



कुमार आनंद, प्रशा.  
अधिकारी